भूमिका ।

—:o:—

कुछ समय से विचारशील जनों के मन में यह बात आने लगी है कि देश में एक भाषा और एक लिपि होने की बड़ी ज़रूरत है, और हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि ही इस योग्य

भूमिका।

आज समय में विचारशील जनों के मन में यह बात आने लगी है कि देश में एक भाषा और एक लिपि होने की बड़ी ज़रूरत है, और हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि ही इस योग्य है। हमारे मुसलमान भाई इसकी प्रतिकूलता करते हैं। वे विदेशी फ़ारसी लिपि, और विदेशी भाषा के शब्दों से लबालब भरी हुई उर्दू, को ही इस योग्य बतलाते हैं। परन्तु वे हमारी प्रतिकूलता करते किस बात में नहीं? सामाजिक, धार्मिक, यहां तक कि राजनैतिक विषयों में भी उनका हिन्दुओं से ३६ का सम्बन्ध है। भाषा और लिपि के विषय में उनकी दलीलें ऐसी भ्रमपूर्ण, ऐसी निर्मूल, ऐसी कमज़ोर और ऐसी [illegible] हैं कि [illegible] और [illegible] बिलकुल उनके [illegible] नहीं हो सकता। बंगाली, गुजराती, मराठा और मद्रासी सब [illegible] देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा को देवनागरी

लोगों का मत भी बड़ा भारी है। क्योंकि जब हम
उनसे कहते हैं कि आप अपनी भाषा को प्रधानता न
देकर हमारी भाषा को दीजिए—उसी को देश-व्यापक
भाषा बनाइए—तब उनसे अपनी भाषा का कुछ हाल
भी तो बताना चाहिए। अपनी भाषा की उत्पत्ति,
विकास और वर्तमान स्थिति का थोड़ा सा भी हाल
न बतला कर, अन्य प्रान्तवालों से उसे क़बूल कर लेने
की प्रार्थना करना भी तो अच्छा नहीं लगता।

इन्हीं बातों का विचार करके हमने यह छोटी
सी पुस्तक लिखी है। इसमें वर्तमान हिन्दी की
बातों की अपेक्षा उसकी पूर्ववर्तिनी भाषाओं ही
की बातें अधिक हैं। हिन्दी की उत्पत्ति के वर्णन
में इस बात की ज़रूरत थी। बंगाले में भागीरथी
के किनारे रहनेवालों से यह कह देना काफ़ी नहीं
कि गङ्गा, हरद्वार से आई है या वहाँ उत्पन्न हुई है।
नहीं, ठेठ गङ्गोत्तरी तक जाना होगा, और वहाँ से
गङ्गा की उत्पत्ति का वर्णन करके क्रम क्रम से
हरद्वार, कानपुर, प्रयाग, काशी, पटना होते हुए
बंगाले के प्रान्त में पहुँचना होगा। इसी से हिन्दी
की उत्पत्ति लिखने में आदिम आर्यों की पुरानी से
पुरानी भाषाओं का उल्लेख करके उनके क्रमविकास

हैं। इससे मालूम होता है कि भाषाओं की हिन्दी के विषय में जो बातें मालूम हुई हैं वे इस प्रकरण में आ गई हैं। इस निबन्ध के [illegible] में डाक्टर ग्रियर्सन की इस पुस्तक से सहायता मिली है। भाषाओं की जाँच से स[illegible] रखने वाली सब किताबें जब निकल चुकेंगी डाक्टर साहब की भूमिका अलग [illegible] निकलेगी। सम्भव है उसमें कोई नई बातें देखने को मिलें। पर तब तक ठहरने की हम विशेष ज़रूरत नहीं समझते। क्योंकि इस विषय के सिद्धान्त बड़े ही अनस्थिर हैं—बड़े ही परिवर्तनशील हैं। जो सिद्धान्त आज दृढ़ समझा जाता है कल किसी नई बात के मालूम होने पर, अप्रामाणिक सिद्ध हो जाता है। इससे यदि दो चार वर्ष ठहरने से कोई नई बातें मालूम भी हो जायँ, तो कौन कह सकता है, आगे चल कर किसी दिन वे भी न अप्रामाणिक सिद्ध हो जायँगी। अतएव आगे की बातें आगे होती जायँगी। इस समय जो कुछ सामने है उसीके आधार पर हम इस विषय को थोड़े में लिखते हैं।

[illegible]

[illegible]

जहाँ सुभीता होता था वहाँ जाकर रहते थे। अपनी भेड़ें, बकरियाँ और गायें लिये ये घूमा क[illegible] थे। धीरे धीरे कुछ लोग खेती भी करने लगे। [illegible] जब पास पास रहने से गुज़ारा न हुआ तब उ[illegible] से कुछ पश्चिम की ओर चल दिये, कुछ पूर्व [illegible] ओर। जो लोग पश्चिम की ओर गये उनमें ग्रीक[illegible] लैटिन, केल्टिक और ट्यूटानिक भाषा बोलनेवा[illegible] जातियों की उत्पत्ति हुई। जो पूर्व को गये उनमें भिन्न भिन्न भाषायें बोलनेवाली जातियाँ उत्पन्न हुईं उनमें से एक का नाम आर्य्य हुआ।

आर्य्य लोगों ने अपना आदिम स्थान कब छो[illegible] पता नहीं चलता। लेकिन छोड़ा ज़रूर, यह निःसन्दे[illegible] है। बहुत करके उन्होंने कास्पियन सागर के [illegible] से प्रयाण किया और पूर्व की ओर बढ़ने लगे [illegible] जब ये आक्सस और अक्ज़ारटिस नदियों के किन[illegible] आये, तब वहीं ठहर गये। यह देश उनको [illegible] पसन्द आया। सम्भव है ये लोग के उस प्रान्त [illegible] ठहरे हों, जो औरों की अपेक्षा अधिक सरसब्ज़ [illegible] परिस्थिति में ग्रीक को ही आर्यों का सब से पुरा[illegible] निवास-स्थान मानना चाहिए। यहाँ कुछ स[illegible] तक रह कर आर्य्य लोग पूर्वोक्त नदियों के किन[illegible]

[illegible]

[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
कुल	[illegible]

[illegible]

थे यूरप और अफ्रीका आदि की, तथा कितनीं ही अनार्य, भाषायें बोलते हैं। ईरानी और आर्य भाषा से यह मतलब नहीं कि इस नाम की कोई पृथक भाषा हैं। नहीं, इनसे सिर्फ़ इतनाही मतलब है, कि जो भाषायें २२ करोड़ आदमी इस समय हिन्दुस्तान में बोलते हैं वे पुरानी आर्य और ईरानी भाषाओं से उत्पन्न हुई हैं। ये दो शाखायें हैं। इन्हीं से और कितनी ही भाषाओं की उत्पत्ति हुई है।

ईरानी शाखा।

खोकन्द और बदख्शां तक सब आर्य साथ साथ रहे। यहां से कुछ आर्य हिन्दुस्तान की तरफ़ आये और कुछ फ़ारिस की तरफ़ गये। इन फ़ारिस की तरफ़ जाने वालों में से कुछ लोग काश्मीर के उत्तर, पामीर, पहुंचे। ये लोग अब तक ईरानी भाषायें बोलते हैं। जो लोग फारिस की तरफ़ गये थे वे धीरे धीरे मर्व, फारिस, अफ़गानिस्तान और बिलोचिस्तान में फैल गये। यहां इनकी भाषा के दो भेद हो गये। परजिक और मीडिक।

परजिक भाषा।

परजिक भाषा का दूसरा नाम पुरानी फारसी है। ईसा के पाँच छः सौ वर्ष पहले ही से इसका

जानते हैं वहाँ कभी कभी फ़ारसी बोलते हैं। या अफ़ग़ानिस्तान और फ़ारिस से आकर जो लोग यहाँ बस गये हैं, अथवा जो लोग उन देशों से व्यापार के लिए यहाँ आते हैं—विशेष करके घोड़ों के व्यापारी—वे फ़ारसी बोलते हैं। फ़ारसी बोली और लेख के मुँह से अब बहुत कम सुनने में आती है। जो ग़ैर फ़ारसी जाननेवाले इसे बोल लेते हैं, पर फ़ारसी उनकी बोली नहीं। इससे वे विशुद्ध फ़ारसी नहीं बोल सकते।

मुसलमानी राज्य में जो लोग फ़ारिस और अफ़ग़ानिस्तान आदि देशों से आकर इस देश में बस गये थे और जिनकी सन्तति अब तक यहाँ वर्तमान है—वर्तमान है क्यों, बढ़ती जाती है—उनके पूर्वज ईरानियों के वंशज थे। अर्थात् वे लोग जो भाषा बोलते थे वह पुरानी ईरानी भाषा से उत्पन्न हुई थी। आर्यों ने अपनी जिस शाखा का साथ बहुत दिनों के पहले पास नहीं छोड़ा था, उसी शाखा के वंशधर, सिकन्दर के बाद, हिन्दुस्तान में आकर फिर आर्यों के वंशजों के साथ रहने लगे। इस तरह का मेलजोल सब बातों में वहाँ बहुत पहले हो चुका था। इतिहास-वेत्ता लिखते हैं कि सिकन्दर

के समय में, और उसके बाद भी, सूर्योपासक पुराने ईरानियों के वंशज, धर्मोपदेश करने के लिए, इस देश में आये थे। इन में बहुत से शक (सीथियन। Scythian) लोग भी थे। इस बात को हुए कोई दो हज़ार वर्ष हुए। ये लोग इस देश में आकर धीरे धीरे यहां के ब्राह्मणों में मिल गये और अब तक शाकद्वीपीय ब्राह्मण कहलाते हैं।

जब मुसलमानों की प्रभुता फ़ारिस में बढ़ी, और वहां के अग्निपूजक ईरानियों पर अत्याचार होने लगे, तब ज़रथुस्त्र के उपासक कुछ लोग इस देश में भग आये और हिन्दुस्तान के पश्चिम, गुजरात में, रहने लगे। आज कल के पारसी उन्हीं की सन्तति हैं। पर, यद्यपि भारत के शाकद्वीपीय ब्राह्मण और पारसी ईरानियों के वंशज हैं तथापि न तो वे ईरान ही की कोई भाषा बोलते हैं और न उसकी कोई शाखा ही। इनको इस देश में रहते बहुत दिन हो गये हैं। इसलिए इनकी बोली यहीं की बोली हो गई है।

मीडिक भाषा।

मीडिक भाषा-समूह में बहुत सी भाषायें और बोलियां शामिल हैं, ईरान के जितने ही हिस्सों में यह

भाषा बोली जाती थी। ये सब हिस्से, सूबे, या प्रान्त पास ही पास न थे। कोई कोई एक दूसरे से बहुत दूर थे। मीडिया पुराने ज़माने में फ़ारिस का वह हिस्सा कहलाता था जिसे इस समय पश्चिमी फ़ारिस कहते हैं। मीडिया देश की भाषा का नाम मीडिक है। पारसी लोगों का प्रसिद्ध धर्मग्रन्थ अवस्ता इसी पुरानी मीडिक भाषा में है। बहुत लोग अब तक यह समझते थे कि अवस्ता ग्रन्थ ज़ेन्द भाषा में है। उसका नाम ज़ेन्द-अवस्ता सुन कर यही भ्रम होता है। परन्तु यह भूल है। इस भूल के कारण एक योरोपीय पण्डित महोदय हैं। उन्होंने भ्रम से अवस्ता की रचना ज़ेन्द भाषा में बतला दी। और लोगों ने बिना निश्चय किये ही इस मत को मान लिया। पर अब यह बात अच्छी तरह साबित करदी गई है कि अवस्ता की भाषा ज़ेन्द नहीं। भाषा उसकी पुरानी मीडिक है। अवस्ता का अनुवाद और उस पर भाष्य ईरान की पुरानी भाषा पहलवी में है। इस अनुवाद और भाष्य का नाम ज़ेन्द है, भाषा का नहीं। वेदों की तरह अवस्ता के भी सब मंत्र एक ही साथ निर्माण नहीं हुए। कोई पहले हुआ है, कोई पीछे। उसका सब

गई उसका और उसकी भाषाओं का हो चुका। अब उन आर्यों का हाल सुनिए जो ईरान और बदख्शाँ का पहाड़ी दक्षिण की तरफ़ हिन्दुस्तान में आये। आर्यों की क्यों दो शाखायें होगईं; एक तरफ़ गई, दूसरी दूसरी तरफ़ उत्तर नहीं दिया जा सकता। भेद के कारण यह बात हुई हो। या आर्यों की राज्यप्रणाली हमारे पुराने आर्यों पसन्द न आई हो। क्योंकि ईरानी लोग पुराने ज़माने से ही अपने में से एक आदमी राजा बनाकर उसके अधीन रहने लगे थे हिन्दुस्तान की तरफ़ आने वाले आर्यों को यह बात पसन्द न थी। अथवा आर्यों के विभक्त होने का इन दो में से एक भी कारण न हो। सम्भव है वे यों ही दक्षिण की तरफ़ आने को बढ़ते गये हों। क्योंकि जो जातियाँ अपने पशु-समूह को साथ लिये घूमा करती हैं वे स्थिर नो रहती नहीं। हमेशा ही स्थान-परिवर्तन किया करती हैं। अतएव सम्भव है आर्य्य लोग अपनी तत्कालीन स्थिति के अनुसार हिन्दुस्तान की तरफ़ योंही चले आये [illegible]। चाहे

[illegible]

[illegible]

[illegible]

होता है कि देवोपासक आर्य्य सुरापान और असुरोपासक सुरापान के विरोधी थे में वाल्मीकीय रामायण के बालकाण्ड का सर्ग देखिए। जान पड़ता है सुरापान न से ईरान की तरफ़ आने वाले आर्यों से पूर्वज आर्य्य घृणा करने लगे थे। उन से का भी शायद यही मुख्य कारण हो। पारसियों अवस्ता में असुर उपास्य माने गये और सुर देवता घृणास्पद।

ऋग्वेद के बहुत पुराने मंत्रों में असुर सुर (देव) दोनों पूज्य माने गये हैं। कहीं कहीं असुरों से घृणा की गई है। वेदों उत्तर काल के साहित्य में तो असुर सर्वत्र ही और निंद्य माने गये हैं।

"असु" शब्द का अर्थ है "प्राण"। जो सत्त्व या बलवान हो वही असुर है। बाबू महेशचन्द्र घोष "प्रवासी" में लिखते हैं कि 'असुर' शब्द ऋग्वेद में कोई १०० दफ़े आया है। उस में से केवल ११ स्थल ऐसे हैं जहां इस शब्द का अर्थ देवशत्रु है। अन्यत्र सब कहीं सविता, पूषा, मित्र, वरुण, अग्नि, सोम और कहीं कहीं श्रेष्ठ मनुष्यों के लिए भी "असुर"

[illegible] प्रयोग किया गया है । उदाहरण के लिए ऋग्वेद में पहले मण्डल का ३५ वाँ, दूसरे का १७ वाँ, सातवें का दूसरा और दसवें का ११४ वाँ सूक्त देखिए ; इन से प्रगट है कि बहुत पुराने ज़माने में असुर शब्द का अर्थ बुरा नहीं था । और क्योंकि अवस्ता में अहुर (असुर) को उपास्य है, और यह पारसियों का मूल ग्रन्थ है अतएव हमारे [illegible] हैं जिनके [illegible] थे और जिन को हम लोग अपने पूर्व पुरुष समझते हैं ।

वैदिक देवताओं और वैदिक शब्दों की तुलना करने से जाने पर यह निर्विवाद सिद्ध होता है कि हिन्दू और पारसी की भाषा बोलने वालों के पूर्वज किसी समय एक ही भाषा बोलते थे । यथा :—

वैदिक शब्द	अवस्ता के शब्द
मित्र	मिथ
अर्यमन्	ऐर्यमन्
[illegible]	पच
पशु	पसु
दानव	दानु

गाथा	गाथा
मन्त्र	मन्थ्र
होता	ज़ओता
आहुति	आज़ुइति

संस्कृत और अवस्ता की भाषा में इतना सादृश्य है कि दोनों का मिलान करने से इस बात में ज़रा भी सन्देह की जगह नहीं रह जाती कि किसी समय ये दोनों भाषायें एक ही थीं। शब्द, धातु, कृदन्त, तद्धित, अव्यय इत्यादि सभी विषयों में विलक्षण सादृश्य है।

उदाहरण

संस्कृत	अवस्ता की भाषा
नर	नरेम्
रथ	रथम्
देव	दएव
गौ	गाओ
कर्ण	करेन
गम्य	गम्य
शत	सत
पशु	पसु
दात्र	दाथ्र

[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]

[illegible]

पूर्वीय देश, तुर्किस्तान की सरहद, बदख़शां से काश्मीर तक इलाक़ा की ओर काफ़िरिस्तान, चित्राल, गिलगित और दारदिस्तान की उत्तरी सरहदों के बीच बोली। मालूम पड़ता है कि भाषाओं का जो समूह अपने आदिम स्थान से [illegible] [illegible] की तरफ, आया था, उसका कुछ भाग [illegible] [illegible], पाकिस्तान कहीं के [illegible] [illegible] [illegible] पहुँचा है। और कहीं से [illegible] और [illegible] आदि में [illegible] गया है। [illegible], [illegible] [illegible], [illegible], [illegible] आदि भाषाएँ या [illegible] जो दारदिस्तान के उत्तरी प्रदेशों के [illegible] जाती हैं, उनका संस्कृत से कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। इनमें कुछ [illegible] भी आते हैं। और न इनके लिखने की कोई लिपि ही पाई जाती है। आदि [illegible] [illegible] की गई हैं उन से यही मालूम होता है कि वे भाषायें संस्कृत से उत्पन्न नहीं हुईं। यदि संस्कृत से सम्बन्ध [illegible] पुरानी संस्कृत से है जिसे पंजाब में रहनेवाले आर्य बोलते थे।

[illegible] आदि असंस्कृत आर्य-भाषा बोलने वालों की संख्या इस देश में बहुत ही कम है। १९०१ ईसवी में यह सिर्फ़ [illegible] थी।

[illegible] बनती रही है

[illegible] दी हा गया

[illegible] पश्चिम से

[illegible] के आगे

[illegible] माना था।

[illegible] आर्य भाषा बोलते थे

[illegible] यहां का मध्य-भाग

[illegible] कभी बना है, कुछ

[illegible] समय में बड़ा अन्तर है।

[illegible] रचना नहीं हुई। कुछ

[illegible] हुई है, कुछ की पश्चात

[illegible] नाते। जिन आर्य

[illegible] उनका सम्पादन

[illegible] दिया जिसमें उन्हें हम

[illegible] रचना-काल और

[illegible] जिस भाग को जहां

[illegible] से रचना-काल के अनु

[illegible] पता सहज में नहीं लग

[illegible] चुका है, सब आर्य एक

[illegible] आये। धीरे धीरे आ

[illegible] विद्वानों का मत है

[illegible] रहीं हैं। यहीं प्रायः प्रसिद्ध वैदिक आश्रम रहे हैं। इसलिये अनुमानतः [illegible] है कि [illegible] क्षेत्र, दक्षिण में [illegible], पूर्व में प्रयाग, [illegible] में [illegible]। इस मध्य देश के एक छोर से दूसरे छोर तक सरस्वती नदी की पावन धारा बहती थी। वैदिक समय में उसी के किनारे अनेक ऋषियों का [illegible] था।

संस्कृतोत्पन्न आर्य्य-भाषाओं की दो शाखायें।

संस्कृत से उत्पन्न होने वाली जितनी भाषायें इस समय हिन्दुस्तान में बोली जाती हैं उनकी दो शाखायें हैं। वे दो भागों में विभक्त हैं। एक शाखा तो ठीक इस प्रान्त में बोली जाती है जिसका पुराना नाम मध्य-देश था। दूसरी शाखा इस मध्य-देश के तीन तरफ़ बोली जाती है। उससे निकली हुई भाषाओं का आरम्भ काश्मीर से होता है। वहाँ से पश्चिमी पंजाब, सिन्ध और महाराष्ट्र देश में होती हुई वे मध्य भारत, उड़ीसा, बिहार, बंगाल और आसाम तक पहुँची हैं। गुजरात को इसने छोड़ दिया है, क्योंकि वहाँ की भाषा मध्यदेशीय भाषा से सम्बन्ध रखती है। इसका कारण

[illegible] के पुराने ज़माने में गुजरात प्रान्त मथुरा [illegible] जीता गया था। मथुरा के मध्यागत आर्यों ने गुजरात के पूर्वागत आर्यों को अपने अधीन किया था। मथुरा मध्य देश में था। और मथुरा के मध्यागत आर्य गुजरात में आकर रहने लगे। इसी से मध्य-देश की भाषा [illegible] प्रचलित भाषा हो गई। हिन्दुस्तान भर में [illegible] प्रान्त ऐसा [illegible] जिसके भिन्न भिन्न भागों में [illegible] [illegible] की भाषा स्वीकार करता है

अन्तःशाखा और बहिःशाखा।

परवर्ती मध्यागत आर्य जो मध्यदेश [illegible] में [illegible] उनकी भाषा का नाम ग्रियर्सन ने [illegible] शाखा रक्खे हैं। और जो पूर्ववर्ती आर्य [illegible] द्वारा बाहर निकाल दिये गये थे, [illegible] [illegible] में आकर जो रहने लगे थे, उनकी [illegible] नाम बहिःशाखा रक्खे हैं।

इन दोनों शाखाओं की आपस में [illegible] है। प्रत्येक में कुछ न कुछ [illegible] गुणों का [illegible] [illegible] के [illegible] है उनको अन्तःशाखा कहते

दिखाते हैं, यहाँ तक कि यह [illegible] 'स' [illegible] है। यह परिवर्तन [illegible] नहीं [illegible] के सम्पादित [illegible] के 'बेगम' शब्द का [illegible] 'बेगहु' कर दिया है। पूर्व की तरह [illegible] 'स', 'श' हो गया है। महाराष्ट्र में और [illegible] पन बहुत [illegible] हो गया है। [illegible] 'स' और भ्रष्ट लिखे [illegible] 'स' और [illegible] गई है। [illegible] उनको [illegible] कुछ भी आशा नहीं है। [illegible] विगड़ कर 'ग' हो गया है।

[illegible] भाषाओं में भी [illegible] है। [illegible] [illegible] है उनकी [illegible] [illegible] और उनका [illegible] हो गया है और [illegible] और ही [illegible] शब्द [illegible] गये हैं। उन्हीं को [illegible] जाता है। उदाहरण के लिए [illegible] 'हो' आदि [illegible] [illegible] में आती है उस शब्द का [illegible] समझना चाहिए। [illegible] शब्द [illegible] [illegible] अधिक [illegible]

हैं, और पंजाबी का कुछ भाग बनाते, लहँदा में मिल जाती है। लहँदा वह भाषा है जो पंजाब के पश्चिम मुलतान और बहावलपुर आदि में बोली जाती है। गुजरात में भी इस भीतरी शाखा का प्राधान्य है। अतः उसने पूर्व-प्रचलित बाहरी शाखा की भाषा के अधिकार को छीन लिया है।

जिन भाषाओं का ज़िक्र ऊपर किया गया उन्हें छोड़ कर शेष जितनी संस्कृतोत्पन्न आर्य-भाषायें हैं सब बाहरी शाखा के अन्तर्गत हैं।

संस्कृतोत्पन्न आर्य्य-भाषाओं के भेद ।

संस्कृत से (याद रखिए, पुरानी संस्कृत से मतलब है) उत्पन्न हुई जितनी आर्य भाषायें हैं वे नीचे लिखे अनुसार शाखाओं, उपशाखाओं और भाषाओं में विभाजित की जा सकती हैं:—

(१) बाहरी शाखा। इसकी तीन उपशाखायें हैं—
—१-पश्चिमी, दक्षिणी और पूर्वी।

(२) मध्यवर्ती शाखा।

(३) भीतरी शाखा। इसकी दो उपशाखायें हैं—

अब हम नीचे एक लेखा [illegible] कि मालूम हो जायगा कि प्रत्येक उपशाखा और शाखाओं [illegible] १९०१ ईसवी की मर्दु- [illegible] के अनुसार प्रत्येक उपशाखा और शाखा [illegible] वालों की संख्या [illegible]

बाहरी शाखा

क) उत्तर-पश्चिमी उपशाखा		३,३[illegible]
१ काश्मीरी	१,००७,९[illegible]	
२ कोहिस्तानी	[illegible]	
३ लहँदा	३,३३७,९[illegible]	
४ सिन्धी	३,००६,[illegible]	
ख) दक्षिणी उपशाखा		[illegible]
५ मराठी	१८,२३७,८[illegible]	
ग) पूर्वी उपशाखा		[illegible]
६ [illegible]	[illegible]	
७ [illegible]	[illegible]	
८ [illegible]	[illegible]	
९ [illegible]	[illegible]	

मध्यवर्ती शाखा

[illegible] उपशाखा		[illegible]
[illegible]	[illegible]	

भीतरी शाखा

(ङ) पश्चिमी उपशाखा		७८,६६६,९९९
११ पश्चिमी हिन्दी	४०,७१४,९२५	
१२ राजस्थानी	१०,९१७,७१२	
१३ गुजराती	९,४३८,५०१	
१४ पंजाबी	१३,०७०,९११	
(च) उत्तरी उपशाखा		२,१०४,९८१
१५ पश्चिमी पहाड़ी	१,७१०,०२९	
१६ मध्यवर्ती पहाड़ी	१,२७० ९५१	
१७ पूर्वी पहाड़ी	१४२ ७०१	
		२३१ ७२०,५०९

इससे मालूम हुआ कि भारत की आर्य भाषायें तीन शाखाओं ८ उपशाखाओं और सत्रह भाषाओं में विभक्त हैं, और २३ करोड़ से भी अधिक आदमी उन्हें बोलते हैं। इन सब की आबादी २९४,३६१,०५६ अर्थात् तीस करोड़ के लगभग है। उसमें से पंद्रह करोड़ आदमी ये भाषायें बोलते हैं, साढ़े पाँच करोड़ द्राविड़ भाषायें और शेष तीन करोड़ अनार्य विदेशी भाषायें। तामील, तैलगू, कनारी आदि द्राविड़-भाषायें मद्रास प्रान्त

जाती नहीं है। बहुत सी विलायती [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] कर [illegible] गये हैं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] दिया गया है। ये [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] और [illegible] आदि [illegible] में पाई जाती हैं।

प्राकृत के तीन भेद ।

अशोक का समय ईसा के २५० वर्ष पहले है और पतञ्जलि का १५० वर्ष पहले। अशोक के शिलालेख और पतञ्जलि के ग्रन्थों से मालूम होता है कि इनसे पूर्व कोई तीन सौ वर्ष पहले, उनकी [illegible] ऐसी भाषा प्रचलित हो गई थी जिसके लिए कई परिमार्जित व्याकरण थे। यह पुरानी संस्कृत से भिन्न थी। इस समय जनता में बोली [illegible] जिसका [illegible] थी। अर्थात् जो पुरानी प्राकृत वैदिक [illegible] और साथ की भाषा का [illegible] यह नई भाषा [illegible] हुई थी। इस भाषा के व्याकरण [illegible] और वैदिक भाषा की भी [illegible] हुई। यह परिमार्जित भाषा भी पुरानी संस्कृत की किसी उपभाषा या बोली से निकली थी। इस परिमार्जित भाषा का नाम हुआ "संस्कृत" अर्थात् "संस्कार की गई"—"बनावटी", और उस नई भाषा का नाम हुआ "प्राकृत" अर्थात् "स्वाभाविक" या "[illegible]"।

वेद-मंत्रों का कुछ भाग तो पुरानी संस्कृत में है और कुछ परिमार्जित संस्कृत में। इस से साबित

[illegible]

में कोई सन्देह नहीं कि संस्कृत और प्राकृत की सहायता से वर्तमान भाषाओं का सम्बन्ध बहुत कुछ ठीक ठीक मालूम हो सकता है, परन्तु भाषायें इतनी हद नहीं। इस के लिए तो अपभ्रंश भाषायें ही ढूंढनी होंगी।

लिखित साहित्य में सिर्फ़ एक ही अपभ्रंश भाषा का नमूना मिलता है। यह नागर अपभ्रंश है। इस का प्रचार बहुत कुछ पश्चिमी भारत में था। पर प्राकृत व्याकरणों में भी नियम दिये हुए हैं। उन से अन्यान्य अपभ्रंश भाषाओं के मुख्य मुख्य लक्षण मालूम करना कठिन नहीं। यहाँ पर हम अपभ्रंश भाषाओं की सिर्फ़ नामावली देते हैं और यह बतलाते हैं कि कौन वर्तमान भाषा किस अपभ्रंश से निकली है।

बाहरी शाखा की अपभ्रंश भाषायें।

सिन्ध नदी के अधोभाग के आस पास जो देश है उस में व्राचड़ा नाम की अपभ्रंश भाषा बोली जाती थी। वर्तमान समय की सिन्धी और लहँडा उसी से निकली हैं। लहँडा उस प्रान्त की भाषा है जिस का पुराना नाम केकय देश है। सम्भव है केकय देश

है। जिस प्राकृत भाषा का नाम अर्धमागधी है वह मगध का प्राकृत है। पूर्वकाल में जिसकी भाषा है, वह यह दोनों में [illegible] की भाषा हुई थी।

प्राचीनकाल-अपभ्रंश भाषा प्रचार के पूर्व से, मिथिला की तरह, तब मैथिली का उत्तरी अपभ्रंश प्रचलित थी। वर्तमान मैथिली भाषा उसी से निकली है।

जिन प्रान्तों में भोजपुरी भाषा बोली जाती थी उनके उत्तर, पश्चिमोत्तर छोटा नागपुर, बिहार और [illegible] प्रान्तों के पूर्वी भाग में मागधी प्राकृत की अपभ्रंश, मागध भाषा, बोली जाती थी। इसका प्रचार बहुत बड़ा था। वर्तमान बिहारी भाषा इसी से उत्पन्न है। इस अपभ्रंश की एक बोली अब तक अपने पुराने नाम से मशहूर है यह आज कल मगही कहलाती है। मगही शब्द मागधी का ही अपभ्रंश है। मागध अपभ्रंश की किसी समय यही प्रधान बोली थी। यह अपभ्रंश भाषा पुरानी पूर्वी प्राकृत की समवयस्क थी। भोजपुरी, मैथिली और मगही भी उसी के विकासप्राप्त रूप थे। उसके ये रूप बिगड़ते बिगड़ते या विकास होते होते, हो गये थे। मगही, मैथिली, और भोजपुरी इन चारों भाषाओं की बाबत दि

[illegible] संस्कृत के [illegible]
[illegible]
[illegible] है।
[illegible] संस्कृत का [illegible]
[illegible]
[illegible] हुए हैं।
[illegible] और
[illegible] विशेषतापूर्ण [illegible]
[illegible] परन्तु [illegible]
[illegible] संस्कृत के [illegible]
[illegible] प्राकृत [illegible]
[illegible] प्राकृत के [illegible]
[illegible] संस्कृत के [illegible]
[illegible]
[illegible]
संस्कृत के [illegible]
[illegible]
[illegible] इस बात का [illegible]
[illegible] देश में संस्कृत
[illegible] यह बात स्पष्ट भी होती
है, क्योंकि भारत की संस्कृत एवं वर्तमान भाषा

[illegible] ध्यान दीजिए, उस का प्रभा[illegible]
[illegible] कीजिए, संस्कृत का प्रभाव भाप के[illegible]
[illegible] कम हुए मिलेगा। संस्कृत-शब्दों क[illegible]
[illegible] बढ़ता जाता है, पर संस्कृत[illegible]
[illegible] के अनुसार हिन्दी–व्याकरण[illegible]
[illegible] होते हैं। बहुत ही क[illegible]
[illegible] बिलकुल नहीं होते, तो भी[illegible]
[illegible] आचार, आहार, विचार, विहा[illegible]
[illegible] आदि सब तत्सम शब्द हैं[illegible]
[illegible] लिये आते हैं। बहुत क[illegible]
[illegible] होता भी है तो विरो[illegible]
[illegible] आहारों, विचारों, कलाप[illegible]
[illegible] इन में विभक्तियाँ लगाई जा[illegible]
[illegible] इनका रूपान्तर नहीं [illegible]
[illegible] और वचन के अनुस[illegible]
[illegible] आता है, पर विभक्ति[illegible]
[illegible] बहुत कम बदल सक[illegible]
[illegible] शब्दों से क्रिया का क[illegible]
[illegible] शब्दों को क्रिया का [illegible]
[illegible] शब्द और जोड़[illegible]
[illegible] तत्सम हैं। अब इस[illegible]

[illegible] गई है कि बोल चाल
[illegible] नहीं आते । वे यथा-
[illegible] मर्यादाहल शब्द लिखना
[illegible] इसका यह हुआ है कि
[illegible] है। एक तो यह ओ
[illegible] जाती है दूसरी यह ओ
[illegible] सामयिक पुस्तकों में लिखी
[illegible] के सम्पादक इस दोष को
[illegible] बोल चाल ही की
[illegible] की कुछ पुस्तकें भी
[illegible] गई है। जिन अखबारों
[illegible] होती है उनका प्रचार
[illegible] इस बात को जान
[illegible] कर भाषा-भेद बढ़ाना
[illegible] है। कोई कारण
[illegible] बोल चाल की भाषा के शब्द
[illegible] तत्सम शब्द क्यों लिखे
[illegible] गृह' लिखा जाय ?
[illegible] लिखा जाय ? ऊँचा
[illegible] जाय ? संस्कृत जानना
[illegible] । पर उसके मेल से

[illegible] में बिहारियों की [illegible]
[illegible] की गई। इसे
[illegible] यह पूर्वी [illegible]
[illegible] बंगला, उड़िया और
[illegible] और बिहारी की
[illegible] यह [illegible]
[illegible] यह पुराने [illegible]
[illegible] के वासी [illegible]
[illegible] को भी देसाही
[illegible] क्योंकि उनकी [illegible]
[illegible] की [illegible]
[illegible] इसने उनको
[illegible] नहीं करता
[illegible] में बिहारियों का
[illegible] है। बिहारियों
[illegible] तथापि [illegible]
[illegible] उनका [illegible]
[illegible] से उच्चारणमन्य [illegible]
लियों [illegible] विशेषता बिहारियों की
[illegible] में [illegible] रही है। यद्यपि बिहारी
'स' का 'श' नहीं उच्चारण करने, तथापि 'स' को

[illegible] सभा [illegible] आनन्द से फ़ारसी, [illegible] लिखते। उनके विषय में किसी को कुछ [illegible] सहसा साधारण साहित्य के विषय में [illegible] नागरी लिपि में आसानी से लिखा जा सक[illegible] नागरी लिपि के जानने वालों की संख्या फ़ारसी [illegible] जानने वालों की संख्या से कई गुना अधि[illegible] [illegible] सारे भारत में फ़ारसी लिपि [illegible] सर्वथा असम्भव और नागरी का सर्व[illegible] [illegible] यदि मुसल्मान सज्जन हिन्दुस्तान के [illegible] मानते हों, यदि स्वदेश प्रीति को [illegible] समझते हों, यदि एक लिपि के प्रचा[illegible] [illegible] सम्भव मानते हों तो [illegible] [illegible] छोड़कर उन्हें देवनागरी लिपि सीखनी चाहिए।

---

* इति *

INDIAN PRESS, ALLAHABAD